निरंजन राज्यगुरु
अकादेमी पुरस्कारः लोक संगीत (गुजरात)

NIRANJAN RAJYAGURU
Akademi Award: Folk Music (Gujarat)

Born on 24 December 1954 in Mandalikpur village of District Junagadh of Gujarat, Shri Niranjan Rajyaguru is an eminent poet, research scholar, writer, critic and reviewer in Gujarati magazines. His primary education was in the Ghoghavadar village of Saurashtra. In 1978 he got his Master's degree in Gujarati and Folklore from Saurashtra University, Rajkot. In 1982 he received the doctoral degree, Vidyavachaspati from Saurashtra University for 'Dasi Jivan - Life & Literature' (life and works of Dasi Jivan - a saint poet, and his saintly contemporaries of Gujarat).

Niranjan Rajyaguru's work in literary criticism is multifaceted. He is a recognized PhD referee-examiner in the subject of Gujarati language and literature. He is also a B-high grade artist of Radio, and a folk song, folk tale and devotional music artist as well as a folklore expert of Prasar Bharati - Doordarshan.

Niranjan Rajyaguru has sung hundreds of Gujarati bhajans and folksongs. He is an outstanding folk artist of the Saurashtra region. Since the year 2018, he has been giving discourses in Gujarati and Hindi on traditional Gujarati folklore, folk music and folk culture.

For his contribution in the field of folk music, Shri Niranjan Rajyaguru has been honoured with several awards and fellowships including the Senior Research Fellowship of Gujarat Sahitya Academy, Gandhinagar (1990); B.K. Parekh Foundation, Mumbai Fellowship (1991); Dr Homi Bhabha National Fellowship (1992); Padma Shri Kavi Kag Award (2008); Dasi Jivan Award (1992); Foolchhab Award (2011); Gaurav Puraskar from Gujarat State Sangeet Natak Academy (2012); Zaverchand Meghani Award (2017); and Sanskar Vibhushan Puraskar (2017).

Shri Niranjan Rajyaguru receives the Sangeet Natak Akademi Award for the year 2018 for his contribution to the folk music of Gujarat.

SANGEET NATAK AKADEMI AWARDS
संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार
2018

गुजरात के जूनागढ़ जिला के मांडलिकपुर गाँव में 24 दिसंबर 1954 को जन्मे श्री निरंजन राज्यगुरु गुजराती के प्रख्यात कवि, विद्वान, लेखक, आलोचक और समीक्षक हैं। आपकी प्राथमिक शिक्षा सौराष्ट्र के घोघवादार गांव में हुई। 1978 में आपने सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट से गुजराती भाषा और लोकगीत में स्नातकोत्तर किया। 1982 में आपने सौराष्ट्र विश्वविद्यालय से 'दासी जीवन–जीवन और साहित्य' (दासी जीवन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–संत कवि, उनका परिवार और समकालीन संत) पर पीएच.डी. की उपाधि अर्जित की।

निरंजन राज्यगुरु का साहित्यिक आलोचना कर्म बहुआयामी है। आप गुजराती भाषा और साहित्य के विद्वान हैं। आप आकाशवाणी के बी-उच्च श्रेणी कलाकार हैं। लोक गीत, लोक कथा और भक्ति संगीत के प्रतिष्ठित कलाकार होने के साथ-साथ प्रसार भारती-दूरदर्शन के लोकगीत विशेषज्ञ भी हैं। आपने सैकड़ों गुजराती भजन और लोकगीत गाए हैं। आप सौराष्ट्र क्षेत्र के एक उत्कृष्ट लोक कलाकार हैं। वर्ष 2018 से आप पारंपरिक गुजराती लोकगीत, संगीत और संस्कृति पर गुजराती और हिंदी में विमर्श को एक नया आयाम दे रहे हैं।

लोकसंगीत के क्षेत्र में योगदान के लिए, श्री निरंजन राज्यगुरु को गुजरात साहित्य अकादमी, गांधीनगर के वरिष्ठ अनुसंधान फैलोशिप (1990) सहित कई पुरस्कारों और फैलोशिप से सम्मानित किया गया है; जिनमें बी. के. पारेख फाउंडेशन, मुंबई फैलोशिप (1991); डॉ. होमी भाभा राष्ट्रीय फैलोशिप (1992); पद्मश्री कवि काग अवॉर्ड (2008); दासी जीवन पुरस्कार (1992); फूलछब पुरस्कार (2011); गुजरात राज्य संगीत नाटक अकादमी से गौरव पुरस्कार (2012); झावरचंद मेघानी पुरस्कार (2017); और संस्कार विभूषण पुरस्कार (2017) शामिल हैं।

गुजराती लोक संगीत के क्षेत्र में योगदान के लिए श्री निरंजन राज्यगुरु को वर्ष 2018 के संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

SANGEET NATAK AKADEMI AWARDS
संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार
2018